Mahatma Hansraj

The DAV College Trust & Management Society, formed by a group of socially oriented people of Lahore, to raise a memorial in honor of Swami Dayanand Saraswati, the path maker of Indian Renaissance in the 19th century, established its first institution — DAV School, on 1st June, 1886.

Lala Hansraj, a young boy of 22 years, who had just graduated his degree in Arts, standing 2nd in the Panjab University, came forward to take up the responsibility of Head Master of DAV School in the honorary capacity for his whole life.

Born on 19th April, 1864, in a respectable family of a modest means at a small sleepy old town, Bajwara near Hoshiarpur (Punjab), Hansraj had his early education at a school in Bajwara and later on at Hoshiarpur. He joined his elder brother, Shri Mulkh Raj, who was working in the post office at Lahore. Hansraj passed his Entrance Examination of Calcutta University and obtained B.A. degree from Panjab University College, Lahore, standing 2nd in the University. This achievement brought a ray of hope, as Lala Hansraj could now earn his fortune, in the adverse pecuniary circumstances of his family, while working on any coveted position as a government servant.

The Arya Samaj, Lahore, was under immense pressure to start a DAV School in the memory of Swami Dayanand Saraswati. The founding fathers were searching for an Indian who could take up the responsibility of working as Head Master of the School.

Lala Hansraj by this time had started attending the meetings of Arya Samaj, Lahore and was deeply impressed by the life and work of Swami Dayanand Sarawati. He was convinced with the idea of indigenous effort of educating the youth as envisaged in the draft resolution of DAV Society. He Understood the difficulty of the Arya Samaj in finding out an Indian to head the proposed DAV School. He deliberated upon and came out with an unflinching resolution of offering his life-time honorary services as head of DAV School. In 1889, when the 1st College was opened, he became the 1st Principal of the DAV College, Lahore.

This decision of Lala Hansraj created a history in the then educational scenario, though, at the cost of hardships to him and his family. The DAV owes its present status of 1000 vibrant educational campuses to the solemn resolve of sacrificing all conveniences of his life, taken so firmly by Lala Hansraj for the cause of education. He professed and practiced the idea of education wedded to morality. For his selfless service to the society and to the relentless attitude of sacrificing all conveniences of life for the larger good of the society, he was lovingly referred as Mahatma.

Mahatma Hansraj, an ardent champion of his religion and a public-spirited person, was rightly identified with the social and moral revival of India besides his contribution in the field of education. Mahatma Hansraj played a pivotal role in the eradication of social evils like casteism, child marriage, female infanticide, perpetual widowhood, *sati pratha*. He also played a rich role in the struggle for national freedom, doing invaluable service to the nation in the times of earthquakes, famines, floods, epidemics, communal riots etc.

He was elected as the President of DAV College Managing Committee for 7 years and also as the President of Arya Pradeshik Pratinidhi Sabha for 45 years.

Mahatma Hansraj was a prolific writer, profound scholar, a symbol of simplicity, honesty, sacrifice and dedication. Having served his nation for more than half a century, Mahatma ji breathed his last on 15 November, 1938 leaving behind a message of unflinching faith in Arya Samaj and vaidik principles, nationalism, self-help and self-sacrifice.

Department of Posts is pleased to issue Commemorative Postage Stamp on Mahatma Hansraj and appreciates his contribution in building up a new era of education and in enlightening the path for many disciples.

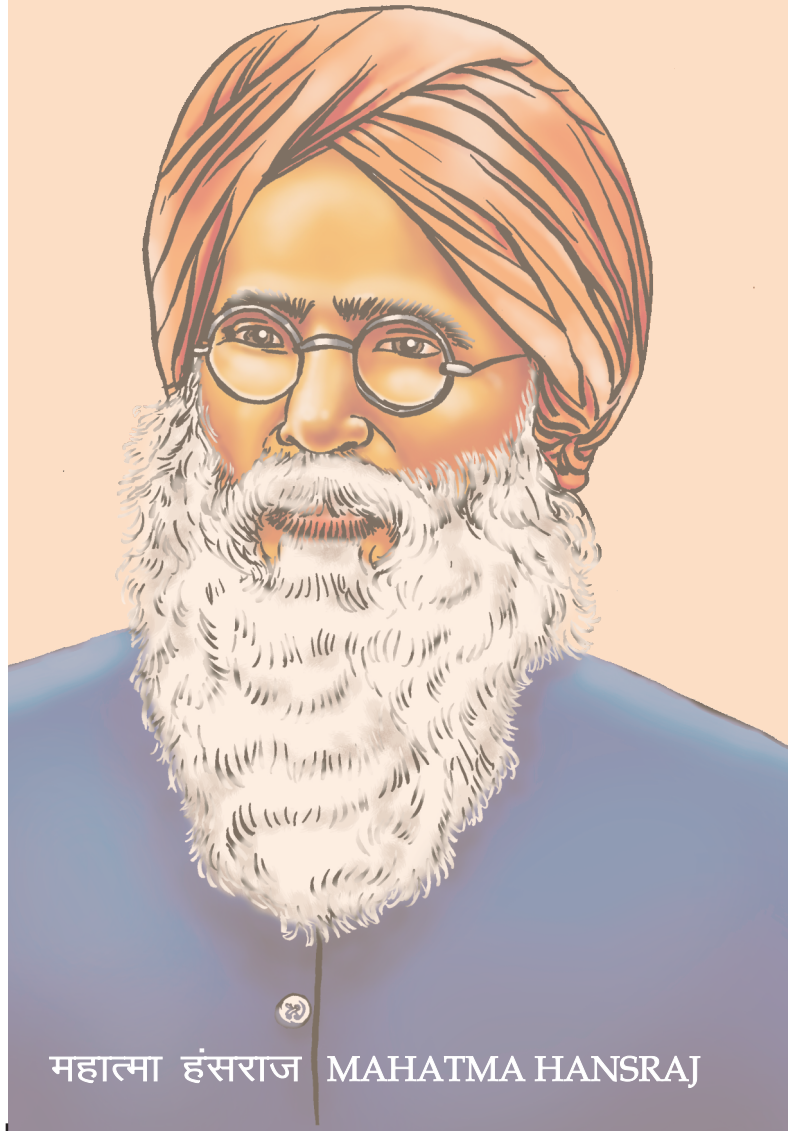
Credits:

Stamp/FDC/Brochure	:	Sh. Suresh Kumar
Cancellation Cachet	:	Smt. Nenu Gupta
Text	:	Referenced from content provided by Proponent

भारतीय डाक
India Post

डाक विभाग
Department of Posts

विवरणिका
BROCHURE



महात्मा हंसराज MAHATMA HANSRAJ

महात्मा हंसराज

डीएवी कॉलेज न्यास व प्रबंधन सोसायटी का गठन लाहौर के कुछ समाजसेवियों के समूह द्वारा किया गया था। इस सोसाइटी ने, 19वीं शताब्दी में भारतीय पुनर्जागरण के प्रणेता स्वामी दयानन्द सरस्वती के सम्मान में एक स्मारक की स्थापना करने हेतु, 01 जून, 1886 को अपने पहले संस्थान 'डीएवी स्कूल' की स्थापना की।

उस समय पंजाब विश्वविद्यालय से कला संवर्ग में द्वितीय स्थान हासिल कर हाल ही में स्नातक की डिग्री प्राप्त करने वाले 22 वर्षीय युवा लाला हंसराज आगे आये और उन्होंने डीएवी स्कूल के आजीवन अवैतनिक प्रधानाचार्य के रूप में कार्य करने का उत्तरदायित्व ग्रहण किया।

हंसराज का जन्म, 19.04.1864 को होशियारपुर (पंजाब) के निकट बाजवाड़ा नामक एक छोटे, शान्त कस्बे के एक सम्मानित साधारण परिवार में हुआ। उनकी प्राथमिक शिक्षा–दीक्षा पहले बाजवाड़ा के एक विद्यालय में और तत्पश्चात होशियारपुर में हुई। इसके बाद वे अपने बड़े भाई श्री मुल्क राज के पास रहने लगे, जो लाहौर के एक डाकघर में कार्यरत थे। हंसराज ने कलकत्ता विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण की और पंजाब विश्वविद्यालय कॉलेज लाहौर से बीए की डिग्री हासिल की और विश्वविद्यालय में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। हंसराज की यह उपलब्धि, प्रतिकूल वित्तीय परिस्थितियों से गुजर रहे उनके परिवार के लिए एक आशा की किरण बनकर आई क्योंकि अब वह सरकारी सेवक के रूप में किसी भी सम्मानित पद पर काम कर जीविकोपार्जन कर सकते थे।

उस समय आर्य समाज, लाहौर स्वामी दयानंद सरस्वती की स्मृति में डीएवी स्कूल की स्थापना करने के प्रयास में था। सोसाइटी के संस्थापक एक ऐसे भारतीय की तलाश में थे, जो स्कूल में प्रधानाचार्य के रूप में कार्य करने की जिम्मेदारी उठा सके।

इस समय तक, लाला हंसराज ने आर्य समाज, लाहौर की सभाओं में शामिल होना शुरू कर दिया था और वह, स्वामी दयानंद सरस्वती के जीवन व उनके कार्यों से अत्यंत प्रभावित थे। वह युवाओं को स्वदेशी शिक्षा प्रदान करने के संबंध में डीएवी सोसाइटी के संकल्प मसौदे में परिकल्पित विचारधारा से पूर्णतः सहमत थे। उन्होंने आर्य समाज द्वारा प्रस्तावित डीएवी स्कूल के नेतृत्व का कार्यभार संभालने के लिए किसी भारतीय की तलाश के संबंध में आर्य समाज को हो रही कठिनाई को महसूस किया और डीएवी स्कूल के प्रमुख के रूप में आजीवन अवैतनिक सेवाएं प्रदान करने का अडिग संकल्प किया। वर्ष 1889 में जब पहला कॉलेज खोला गया तो वह उक्त डीएवी कॉलेज, लाहौर के प्रथम प्रधानाचार्य बने।

लाला हंसराज के इस निर्णय ने तत्कालीन शैक्षणिक परिदृश्य में नये इतिहास का सृजन किया, हालांकि उनके इस निर्णय के कारण उनके परिवार को तमाम कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। वर्तमान में डीएवी सोसाइटी के 1000 शानदार शैक्षणिक परिसर हैं और इसका श्रेय, शिक्षा के अभियान के लिए अपने जीवन की सारी सुख–सुविधाओं का परित्याग करने वाले लाला हंसराज के दृढ़ संकल्प को जाता है। उन्होंने नैतिकताप्रद शिक्षा की विचारधारा का प्रचार–प्रसार करते हुए उस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया। समाज के प्रति उनके निःस्वार्थ सेवा भाव और समाज के व्यापक कल्याण के लिए अपने सभी सुखों का बलिदान करने की उनकी प्रवृत्ति के कारण उन्हें प्रेम से 'महात्मा' कहकर बुलाया जाता था।

धर्म के प्रबल पक्षधर और समाज सेवा की भावना से ओत–प्रोत महात्मा हंसराज, शिक्षा के क्षेत्र में अपने योगदान के साथ–साथ भारत के समाजिक और नैतिक पुनरूत्थान के लिए किए गए कार्यों के लिए जाने जाते हैं। महात्मा के रूप में सुविख्यात हंसराज जी ने जातिवाद, बाल–विवाह, बालिका भ्रूणहत्या, चिर वैधव्य और सती प्रथा जैसी सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। देश की आजादी की लड़ाई में भी उनका योगदान अविस्मरणीय है। महात्मा हंसराज ने भूकम्प, अकाल, बाढ़, महामारी, सांप्रदायिक हिंसा आदि के समय में राष्ट्र को अमूल्य सेवाएं प्रदान की।

महात्मा हंसराज 7 वर्ष तक, डीएवी कॉलेज की प्रबंधन समिति के मनोनीत अध्यक्ष रहे। साथ ही वे, 45 वर्ष तक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष भी रहे।

महात्मा हंसराज ने विपुल स्वरूप का लेखन कार्य किया। वे विशिष्ट कोटि के विद्वान थे और सादगी, ईमानदारी, त्याग और समर्पण के प्रतीक थे। महात्मा जी ने पचास वर्ष से भी अधिक समय तक राष्ट्र सेवा की। 15 नवम्बर 1938 को उन्होंने अंतिम सांस ली। वे अपने पीछे आर्य समाज और वैदिक सिद्धान्तों के प्रति अटूट श्रद्धा व राष्ट्रवाद, स्वयं सहायता तथा आत्मबलिदान की विरासत छोड़ गए हैं।

डाक विभाग, महात्मा हंसराज के सम्मान में स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है और शिक्षा के क्षेत्र में एक नये युग का सूत्रपात करने और अनेक शिष्यों का पथ प्रदर्शन करने में उनके योगदान की सराहना करता है।

आभार :

डाक–टिकट / प्रथम दिवसः श्री सुरेश कुमार
आवरण / विवरणिका
विरूपण कैशे : श्रीमती नीनू गुप्ता
पाठ : प्रस्तावक द्वारा प्रदान की गई सामग्री से संदर्भित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसे
Denomination	: 500 p
जारी करने की तारीख	: 20.04.2024
Date of Release	: 20.04.2024
मुद्रित डाक टिकटें	: 301600
Stamps Printed	: 301600
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

©डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

©Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00